ओ३म्

'जीव–ईश्वर का स्वरुप और परस्पर सम्बन्ध'

–मनमोहन कुमार आर्य, देहरादून।

मनमोहन कुमार आर्य

आत्मा को जीव वा जीवात्मा कहते हैं जो कि सत्य, चित्त, एकदेशी, अल्पज्ञ, अनादि व नित्य स्वरूप वाला है। ईश्वर एक सत्य, चित्त, सर्वज्ञ, निराकार, सर्वव्यापक, अनादि, अजन्मा व नित्य सत्ता को कहते हैं। ईश्वर सर्वातिसूक्ष्म है तथा जीवात्मा अतिसूक्ष्म पदार्थ है। जीवात्मा को कभी किसी ने नहीं बनाया। इसका अस्तित्व स्वयंभू अर्थात् स्वमेव है।

आईये, दोनों सत्ताओं की समानताओं व भिन्नताओं पर विचार करते हैं। जीव और ईश्वर दोनों चेतन पदार्थ हैं। दोनों का स्वभाव पवित्र है, दोनों ही अविनाशी हैं तथा धार्मिकता आदि गुणों से युक्त हैं। इसके अतिरिक्त जीव व ईश्वर में अनेक भेद भी हैं। ईश्वर सृष्टि की उत्पत्ति, स्थिति और प्रलय को करता है, सबको नियम में रखता है तथा जीवों को पाप–पुण्य के फल देता है। यह वह ऐसे अनेक धर्मयुक्त कर्म परमेश्वर के द्वारा किए जाते हैं। जीव के कामों में सन्तानोत्पत्ति, उनका पालन–पोषण तथा ज्ञान–विज्ञान सहित तकनीकी का अनुसंधान व विकास कर उसका उपयोग अपनी आवश्यकता की नाना प्रकार की वस्तुए घड़ी, रेलगाड़ी, कार, कम्प्यूटर, विद्युत से कार्य करने वाले बल्ब व निवास भवन आदि सामग्री बनाना है। जीवात्मा अच्छे काम भी करता है और बुरे काम भी जो उसे नहीं करने चाहिये। जीवों के द्वारा किए जाने वाले बुरे कार्य अज्ञान व स्वार्थ से प्रेरित होकर किये जाते हैं। ईश्वर के नित्यज्ञान, आनन्द और अनन्त बल आदि गुण हैं जबकि जीव के इच्छा–द्वेष, सुख–दुःख, ज्ञान और प्रयत्न आदि गुण हैं। जीव अल्प परिमाणी है तथा अल्पज्ञ है और ब्रह्म अर्थात् ईश्वर सर्वव्यापक तथा सर्वज्ञ है। ईश्वर नित्यशुद्ध, नित्यबुद्ध और नित्यमुक्त स्वभाव वाला है जबकि जीव कभी बद्ध होता है और कभी मुक्त होता है। ईश्वर के सर्वव्यापक और सर्वज्ञ होने के कारण उसे कभी भ्रम अथवा अज्ञान वा अविद्या नहीं हो सकती परन्तु जीव को अल्प परिमाण, एकदेशी व अल्पज्ञ होने के कारण कभी विद्या और कभी अविद्या होती रहती है। ईश्वर जन्म–मरण के दुःख को प्राप्त नहीं होता परन्तु जीव होता है। यह भेद ईश्वर व जीवात्मा कें हैं।

जीवात्मा व ईश्वर का परस्पर क्या सम्बन्ध है, इस पर प्रकाश डालते हुए महर्षि दयानन्द ने कहा है कि **जीव और परमेश्वर का व्याप्य–व्यापक सम्बन्ध है।** इस विवरण को जानकर किसी को भी यह शंका होना स्वाभाविक है कि जिस स्थान पर एक वस्तु होती है, उसी स्थान में दूसरी वस्तु नहीं रह सकती। अतः जहां जीवात्मा है वहां परमेश्वर और जहां परमेश्वर है वहां जीवात्मा की सत्ता कैसे हो सकती है? इस शंका का समाधान यह है कि एक साथ दो पदार्थों का न होने का नियम समान आकार वाले पदार्थों में घट सकता है। असमान आकार वाले पदार्थों में इस स्थिति से भिन्न स्थिति का होना सम्भव है अर्थात् भिन्न आकार वाले पदार्थों में यह नियम लागू नहीं भी होता। महर्षि दयानन्द ने इसका उदाहरण देते हुए कहा है कि जैसे लोहा स्थूल और अग्नि सूक्ष्म होता है, इसलिए लोहे में विद्युत् रूपी अग्नि व्यापक होकर एक ही स्थान में दोनों रहते हैं, वैसे ही जीव परमेश्वर से स्थूल और परमेश्वर जीव से सूक्ष्म होने से परमेश्वर व्यापक और जीव व्याप्य है।

व्याप्य–व्यापक सम्बन्ध की भांति ईश्वर और जीव का सेव्य–सेवक, आधार–आधेय, स्वामी–भृत्य, राजा–प्रजा और पिता–पुत्र आदि सम्बन्ध भी है।

हम आशा करते हैं कि ईश्वर व जीव के स्वरुप व परस्पर सम्बन्ध को जानकर पाठकों को कुछ लाभ हो सकता है। सभी मतों व धर्मो के लोगों को ईश्वर व जीव के स्वरूप व सम्बन्धों को जानकर ज्ञानपूर्वक ईश्वर की स्तुति, प्रार्थना व उपासना कर धर्म, अर्थ, काम व मोक्ष की प्राप्ति करने में तत्पर होना चाहिये।

–मनमोहन कुमार आर्य
पताः 196 चुक्खूवाला–2
देहरादून–248001
फोनः09412985121